Str. 436. 25. Die Scholien: म्रान्नाश्ति। ४पि। द्रष्यते स्म द्रषितः। मैथुनं प्रतीत्येके।

Str. 437, 27. Calc. Ausg., die Handschriften und der Scholiast: पाएडुरपृष्ट: 1 — 28. Calc. Ausg. und D. संक्रिसका, Schol. संकर्सात संकर्सक: । संक्रियां करोरित्युक: ।

Str. 438, 29. Calc. Ausg तूज्ञीशीत, D. तूज्ञीशीत, Schol. तूज्ञीभावः शीलमस्य तू°। — 30. Man lese mit B. E. प्रिष्ट st. परिष्ट । Die Scholien: इष्टबुद्धिनामैकम् विरुद्धं विष्ट कामयते विवश:। म्रिनिष्टा इष्टा च धीर्यस्य स तथा।

Str. 440, 37. 38 Schol. म्रान्तगन्धाद्यः पञ्चाप्येकार्धा इत्येके । Str. 443, 47. Schol. जागरितापि ।

Str. 445, 53. Schol. सांशियका प्रि। — 56. Calc. Ausg. राचिना, Schol. इन्तरनश्च।

Str. 446, 57. = यज्ञदानयोग्य, die Schol. — Calc. Ausg. und E. दानिएया दानिएयोग, die Scholien wie wir. — 61. Man lese mit B. E. und den Scholien: ऽर्नित: st. ऽर्चित: ।

Str. 447, 62. Die Scholien: ऋषिवायता (1. ऋषचायिता) पपि।
Str. 448, 69. Die Scholien: बलवानिष ।

Str. 450, 74. Die Scholien: उद्धिका प्रि। — 75. B. und E. विखु st. विखु, die Scholien wie wir.

Str. 451, 76. Calc. Ausg. Sਕਸ਼ਹਾ। — 78. B. E. ननुद्र: 1

Str. 452, 82. Die Scholien: कलता र्राप।

Str. 454, 88. Calc. Ausg. खर्त:, D. खर्व:, die Scholien: खर् संबर्धो । कर्यति (sic) कर्न: (sic) ।

Str. 455, 94. 456, 95. Calc. Ausg. und B. उर्धजुर und उर्धज्ञ